कंचना कुमारी
अतिथि, शिक्षक, हिन्दी
यू. आर. कॉलेज, रोसड़ा

बी० ए० स्नातक, हिन्दी प्रतिष्ठा
पार्ट III

पंत का कवि-परिचय प्रस्तुत कीजिए।

सुमित्रानन्दन पन्त (सन 1919) सुकोमल भावनाओं के कवि है। अपनी सौन्दर्य भावना और सुकुमार उदात्त कल्पना के लिए और सुकुमार उदात कल्पना के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध है। निसर्गत वे प्रकृति के सुकुमार कवि है प्रकृति के साथ उनकी ऐसी प्रगाढ़ रागात्मकता शैशव से ही हो गई थी। इन्होंने प्रकृति में अनेक रूपों की कल्पना की है इन्होंने प्रकृति के अनेक सौन्दर्य चित्र अंकित किए है। और इसके साथ-साथ कहीं-कहीं स्त्रैयता भी उभर आई है। कहीं-कहीं इन्होंने प्रकृति की नारी रूप में कल्पना करके अपने आपको भी नारी रूप में अंकित किया है। कवि पंत की इस भावना को हिन्दी के कुछ आलोचकों ने स्त्रैण और अस्वाभाविक कहा है जो कि असंगत है। भगवान शंकर अर्द्ध-नारीश्वर है। क्या मानव हृदय में नारीसुलभ कोमलता का होना कोई पाप या अपराध है। हमारे विचार में तो मानव इस

कोमलता के अभाव में कड़ा भयंकर लगने लगा है।

कवि पंत जी की रचनाओं का प्रकाशन काल

वीणा 1918, ग्रंथि 1920 पल्लव 1918-24 गुंजन (1919-32) युगान्त (1934-36) युगवाणी (1936-39) ग्राम्या (1939-40) स्वर्ण किरण (1947) स्वर्णधूलि (1947) उत्तरा (1949) रजतशिखर (1949) शिल्पी (1952) अतिमा (1955) सौवर्ण (1957) वाणी (1958) चिदम्बरा (1958) रश्मिबंध 1959 कला और बूढ़ा चाँद (1959) अभिषेकित (1960) हरी-सुरी सुनहरी टेर (1963) लोकायतन किरण वीणा (1967)

पंत काव्य की रेखाएँ चाहे टेढ़ी मेढ़ी है, किन्तु उनका विकास क्रम सीधा है। इस क्रम में हम पंत को छायावादी, प्रगतिवादी, समन्वयवादी एवं मानववादी आदि रूपों में आकर पंत में छायावादी प्रवृत्तियों का अन्त हो जाता है। ग्राम्या, युगवाणी इनकी प्रगतिवादी रचनाएँ है तत्पश्चात इनकी रचनाओं में मानवतावादी दृष्टिकोण उत्तरोत्तर विकसित होता गया है।